

**DR.MALA KUMARI  
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST  
TEACHER)  
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY  
A.N.D COLLEGE SHAHPUR  
PATORY,SAMASTIPUR  
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)  
PAPER-1 ,UNIT-10,  
THINKING AND REASONING:DEFINITION  
AND NATURE OF THINKING  
LECTURE-63**

**चिंतन की परिभाषा एवं स्वरूप**

**(DEFINITION AND NATURE OF THINKING)**

चिंतन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में होती है। इसे मनोविज्ञानिकों ने भिन्न भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। कुछ लोगो ने इसे वातावरण से मिलने वाली सूचनाओं का मानसिक जोड़-तोड़ बतलाया है तो कुछ लोगो ने इसे एक ऐसी मध्यस्थ प्रक्रिया माना है जो किसी समस्या तथा उसके समाधान के मध्य या बीच में होती है। चिंतन चाहे जिस तरह की भी मानसिक प्रक्रिया क्यों न हो इतना तो स्पष्ट है की इसे सीधे नहीं देखा जा सकता है और इसके बारे में हम व्यवहारों के

आधार पर परोक्ष रूप से जान पाते हैं | यही कारण है की चिंतन को एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रियां कहा गया है |

कागन तथा हेममैन(1976) ने चिंतन की एक सर्वश्रेष्ठ एवं व्यापक परिभाषा दी है इनके अनुसार “प्रतिभाओं,प्रतीकों,संप्रत्ययो,नियमों एवं अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिंतन कहा जाता है”।

सिलभर मैन (1978) के अनुसार “चिंतन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो हमलोगों को उद्दीपक तथा घटनाओं के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व द्वारा किसी समस्या का सामाधान करने में मदद करती है”।

बेरोन (2006) के अनुसार , “चिंतन में संप्रत्ययो,प्रतिज्ञाप्ति तथा प्रतिभाओं का मानसिक जोड़-तोड़ होता है”।

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें चिंतन प्रक्रिया के बारे में कुछ ठोस तथ्य प्राप्त होते हैं जो निम्नांकित हैं -

1. चिंतन में प्रतीकों (symbols),प्रतिभाओं (images) आदि का मानसिक जोड़-तोड़ होता है | इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ की चिंतन में वस्तुओ की वास्तविक उपस्थिति आवश्यक नहीं है |पूर्व ज्ञान के आधार पर हम उन

वस्तुओं का कुछ प्रतिक (image) मन में बना लेते हैं और उसी आधार पर चिंतन की प्रक्रिया होती है। चूँकि चिंतन में मानसिक जोड़-तोड़ होता है जिसे बाहर से देखा नहीं जा सकता है अतः चिंतन एक प्रकार का अप्रकट व्यवहार है।

2. चिंतन एक मध्यस्थ प्रक्रिया होती है। इसका मतलब यह हुआ कि चिंतन एक ऐसी प्रक्रिया है जो उद्दीपक (या कोई समस्या) तथा उसके प्रति की गयी सही अनुक्रिया के बीच में होने वाली प्रक्रिया में किसी न किसी समस्या का समाधान होता है। यही कारण है कि चिंतन को कुछ मनोवैज्ञानिकों ने जैसे विट्टेकर (1970 p 375) ने समस्या-समाधान व्यवहार कहा है। विट्टेकर ने यह भी बतलाया है कि चिंतन में यह समस्या-समाधान व्यवहार में व्यक्ति प्रायः प्रयत्न तथा भूल करता पाया जाता है। ऊपर वर्णन किये गए तथ्यों से चिंतन की स्वरूप की एक झलक तो अवश्य मिल जाती है परन्तु इसके स्वरूप के बारे में विस्तृत रूप से जानने के लिए हमें उन निष्कर्षों पर भी ध्यान देना होगा जिसे हम्फ्रे (1963) ने चिंतन पर व्यक्त किये गए अनेकों मनोवैज्ञानिकों के विचारों का विश्लेषण बतलाया है। हम्फ्रे ने चिंतन के

स्वरूप के बारे में निम्नांकित तथ्यों को हमलोगों के सामने रखा है ।

- (i) चिंतन प्रक्रिया की शुरुआत उस समय होती है ,जब मनुष्य या पशु के सामने ऐसी समस्या आती है जिसका समाधान वह करना चाहता है ।
- (ii) चिंतन में समस्या के भिन्न-भिन्न पहलुओ को जो साधन के पहले अलग-अलग होते है ,एक साथ संयोजित किया जाता है ।
- (iii) चिंतन में गत अनुभूति सम्मिलित होता है लेकिन व्यक्ति वास्तव में गत अनुभूति का उपयोग चिंतन में किस प्रकार करता है ,उसे मनोवैज्ञानिक सही-सही ढंग से पता अभी तक नहीं लगा पाये है ।
- (iv) चाहे मानव हो या पशु चिंतन ,चाहे जीव को अप्रकट व्यवहार करना हो या प्रकट व्यवहार चिंतन की प्रक्रिया में प्रयत्न तथा भूल की प्रक्रिया होती है ।
- (v) चिंतन में अभिप्रेरण का भी विशेष महत्व होता है ।सच्चाई यह है की चिंतन में व्यक्ति का व्यवहार एक निश्चित उद्देश्य की ओर होता है ।
- (vi) चिंतन में भाषा का भी काफी महत्व होता है ।चिंतन करते समय मन में या कभी-कभी जोड़ से भी हम

कुछ बोलते हैं अर्थात भाषा का प्रयोग करते हैं |यही कारण है की कुछ मनोवैज्ञानिको ने चिंतन को एक प्रकार का आंतरिक संभाषण कहा है |

- (vii) चिंतन में भाषा के अलावा प्रतिक का भी उपयोग काफी होता है |अनेक प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया है की दृष्टि प्रतिभा तथा श्रवण प्रतिभा अन्य दुसरे तरह की प्रतिभाओं की उपेक्षा अधिक होते हैं | हम्फ्रे (1963) द्वारा प्रस्तुत किये गए उपयुक्त तथ्यों से चिंतन के स्वरूप का प्रत्येक पहलू स्पष्ट हो जाता है इसी के आधार पर मनोवैज्ञानिको ने यह स्पष्ट रूप से बतलाया है की चिंतन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसके सहारे प्राणी किसी समस्या का समाधान करता है |